लेन्टाना कैमाराः हिमालयी वानस्पतिक विविधता के लिए खतरा

हरीश चन्द्र पाण्डेय, राम गोपाल सिंह एवं पीतामबर प्रसाद ध्यानी
गोविन्द बल्लभ पंत हिमालय पर्यावरण एवं विकास संस्थान,
कोसी–कटारमल, अल्मोड़ा 263643, उत्तराखण्ड

लेन्टाना कैमारा जिसे पहाड़ में कुरी भी कहते हैं एक रोमयुक्त हल्की कंटीली झाड़ी है जो सामान्यतया 0.3 से 1.8 मी० ऊंचाई की होती हैं। इसकी पत्तियां लम्बी अण्डाकार, खुरदरी तथा फूल छोटे–छोटे पीले अथवा संतरी लाल या श्वेत रंग के होते हैं जो गुच्छों में खिलते हैं। इसके फल हरे काले रंग के होते हैं। यह मूल रुप से ट्रोपिकल अमेरिका का पौधा है जो भारत में सर्वप्रथम सजावट व हैज प्लांट के रुप में रोपित किया गया था। आज यह समस्त भारत में प्राकतिक रुप से पाया जाता है। अभी तक यह माना जाता रहा है कि लेंटाना भू–क्षरण को रोकता है किन्तु दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर एवं ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक डा० सी० आर० बाबू ने अपने शोध में इसकी भू–क्षरण रोकने की मिथ्या धारणा को सिरे से नकार दिया है।

लेंटाना विविध जलवायुवीय परिस्थितियों और विभिन्न प्रकार की मदा में सामान्य रुप से वद्धि करता है। यह अत्यधिक वर्षा (200 इंच/वर्षा) क्षेत्रों से लेकर नितांत सूखे क्षेत्रों (30 इंच/वर्षा), उपजाऊ, ऊसर (wasteland), मैदानी तथा 2000 मी० की ऊंचाई तक के क्षेत्रों में सीधे प्रकाश से लेकर मध्यम प्रकाश तक की स्थिति में वद्धि करता है। यह एक सूखारोधी (Drought resistant) पौधा है अतः पानी की कमी वाले क्षेत्रों में भी सामान्य वद्धि करता है।

लेंटाना की कुल 7-8 प्रजातियां हैं जिनमें से भारत में मुख्यतः इसकी तीन प्रजातियॉं पायी जाती हैं– *L. camara var. aculeate Moldenke, L. camara var. mista Bailey एवं L. camara var. nivea Bailey। L. camara var. aculeate भारतवर्ष में* सर्वाधिक पायी जाती है।

लेंटाना कटिंग व बीज दोनों के द्वारा विकसित होता है। यह अत्यधिक तेजी से फैलने वाली झाड़ी है। यह काटने या जलाने के कुछ समय बाद ही तेजी से वद्धि करके घनी झाड़ियों का रुप ले लेती है। लेंटाना़ लगभग पूरे साल पुष्पित होता है जिस कारण बहुत अधिक मात्रा में बीज उत्पादन होता है। अपने इन सब गुणों के कारण यह भारत के बड़े भूभाग में, एक भयानक खरपतवार के रुप में सिर उठा चुका है। इसके द्वारा कषि योग्य भूमि, वन भूमि, चरागाह आदि का बड़ा भूभाग प्रभावित हो चुका है। यह झाड़ी भारत के सभी मैदानी इलाकों के अलावा हिमालयी क्षेत्र में भी मजबूत पकड़ बना चुकी है जिससे इन क्षेत्रों के निवासी इसके निम्नांकित दोषों के दुष्परिणाम सहने को मजबूर हैंः

1- तेजी से फैलने के कारण बड़े भू भाग पर अपनी पकड़ बना चुकी है।
2- इसको काटने से एक तरल पदार्थ का रिसाव होता है उससे अन्य पौधों एवं फसलों को भारी मात्रा में खतरा होता है। इससे दूसरी वनस्पतियों की उत्पत्ति अवरूद्ध हो जाती है।
3- अत्यधिक मात्रा में बीज उत्पादन व विविध प्रकार की जलवायु में भी पनपने के कारण अनियंत्रित वद्धि करती है।

4- इसके फल अनेक प्रकार की चिड़ियाएं खाती है जिससे बीजों का प्रकीर्णन बहुत तेजी से और बड़े भूभाग तक होता है।

5- जिस भूमि पर यह झाड़ी उगती है उस स्थान पर झाड़ियों का बहुत घना जाल बना लेती है जिस कारण अन्य वनस्पतियां नहीं उग पातीं।

6- इसकी टहनियॉं हरी अवस्था में भी आसानी से जल जाती हैं। इस कारण वनों में लगने वाली आग में यह विशेष सहयोग देती है।

7- इसकी पत्तियॉं पशुओं द्वारा खा लिए जाने पर विषैले प्रभाव उत्पन्न करती हैं।

8- सिलर्व व डेके के अनुसार इसकी घनी झाड़ियां मिट्टी की वर्षाजल अवशोषण क्षमता में कमी लाती हैं।

उपरोक्त कारणों से यह पौधा जैव विविधता के लिए बहुत बडा खतरा है। इसकी रोकथाम के लिए प्रभावी उपाय न करने पर यह समस्त हिमालयी क्षेत्र की दुर्लभ वनस्पतियों के लिए संकट खड़ा कर सकता है। इसकी रोकथाम बहुत मुश्किल व महंगी है। इसके लिए निम्नांकित उपाय मुख्य रुप से उपयोग में लाये जा सकते हैं –

यांत्रिक उपायः इसमें पौधे को जनवरी से मार्च के बीच जमीन से एक फीट की ऊँचाई पर से काट कर जला दिया जाता है। पौधे का बचा भाग बरसात में मदा के नरम पड़ जाने पर उखाड़कर जला देते हैं। इसके बाद 2-3 वर्षो तक पुनरुत्पादित पौधों को उखाड़ते रहना इसकी रोकथाम के लिए आवश्यक है।

रसायनिक उपायः इसकी झाड़ियों को काटकर कटे भागों पर 2,4 D का घोल (10%) लगाने से या 2,3,5-T का छिड़काव करना लाभदायक होता है। FRI देहरादून के अनुसार n -butyl easter का छिड़काव भी बहुत प्रभावी होता है।

जैविक उपायः हवाई और फिजी में कुछ कीट Lantana Bug (Q*rthezia insignis* Dougl), Lantana seed fly (O*phiomyia lantanae*) और Lantana lace bug (*Teleonemia scrupulosa* Stal) पाए गये है जो कि लेन्टाना के तने, पत्तियों, फल और फूलों को खाते है जिससे इस पौधे की वद्धि व विकास को रोकने में सहायता मिलती है। भारत में लेन्टाना की रोकथाम हेतु इन विदेशी कीटों के प्रयोग का प्रयास किया जा चुका है किन्तु अन्य पौधों पर भी इन कीटों का प्रभाव जानना आवश्यक शोध का विषय है।

अपने अनेक बुरे प्रभावों के बावजूद लैन्टाना विभिन्न प्रकार से उपयोग में लाकर आय का स्रोत भी साबित हो सकता है। इसके कुछ प्रमुख उपयोग इस प्रकार हैं –

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के प्रचार और संपर्क अधिकारी डा० परमजीत सिंह के अनुसार लैन्टाना को काटकर उसकी लकड़ी से मेज, कुर्सी, पेन स्टेंड, टीवी ट्रोली बुकरेक, टेलीफोन स्टेंड और डस्टबिन आदि अनेक शो–पीस बनाये जा सकते हैं। डा० सिंह के अनुसार लैन्टाना की प्रमुख विशेषता इसकी लकड़ी दीमक और कीटरोधी होती है। अतः इससे बना सामान कई वर्षो तक चलता है।

इसकी पत्तियों को निचोड़कर उनका रस निकाला जा सकता है जो "ग्रीन कलर" का काम करता है। पत्तियॉं व कोमल शाखाएं हरी खाद के रुप में उपयोग की जा सकती हैं। इसके हरे भाग के विश्लेषण के अनुसार इसमें नाइट्रोजन 0.8%, पोटेशियम 0.90%, फोस्फोरस 0.15% तथा कैल्शियम 0.61%, होने से यह उपयोगी खाद साबित हो सकती है। पत्तियॉं के आसवन के उपरांत एक पीला (हरा पीला) तेल प्राप्त

होता है। यह तेल ऐन्टीसैप्टिक इत्यादि के निर्माण में प्रयुक्त होता है। फिलीपीन्स में ताजी जड़ों का रस दॉत दर्द के उपचार हेतु प्रयोग किया जाता है तथा फल और पत्तियों का रस घावों पर मरहम के रूप में उपयोग में लाया जाता है। तने का पेपर–पल्प बनाने में उपयोग हो सकता है। इसके तने से बना पल्प, गत्ते, पैकिंग, लिखने व छपाई का कागज बनाने के लिए उपयुक्त होता है। अगर इस पौधे का उपरोक्त प्रकार से उपयोग किया जाए तो निश्चित ही इसकी अनियंत्रित वद्धि तो रुकेगी ही साथ ही जनसामान्य के लिए यह आय का स्रोत भी बन सकेगा।